7

जापान में हिंदी पुस्तकों की अनमोल विरासतें

–प्रो. ताकेशि फुजिइ और श्री क्योसुके आदाची

जन्म : 16 मई, 1955
शिक्षा : बी.ए., हिंदी विभाग, तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरैन स्टडीज (मार्च 1981), एम.ए., हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय (मार्च 1985)। आसामी में सर्टिफिकेट, आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय (मार्च 1985)। एम.ए., तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरैन स्टडीज (मार्च 1986)। **कार्य :** टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज, हिंदी विभाग में सहायक शिक्षक, वरिष्ठ शोध सहायक, प्राध्यापक, एसोसिएट प्रोफेसर, प्रोफेसर, दक्षिण, निदेशक (सेंटर फॉर डॉक्यूमेंटेशन एंड एरिया-ट्रांस्कल्चरल स्टडीज) पदों को सँभाला (1986-2012)। टोक्यो विश्वविद्यालय में प्राध्यापक (1991)। टोक्यो विमन क्रिशचन विश्वविद्यालय में प्राध्यापक (1997-2012)। चीबा विश्वविद्यालय में प्राध्यापक (1994-2003)। स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज, लंदन तथा दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग में रिसर्च फेलो (मार्च 1990-दिसंबर 1990)। ब्रिटिश पुस्तकालय, लंदन तथा दिल्ली विशविद्यालय, हिंदी विभाग में विदेशी शोध फेलो (फरवरी 1997-मार्च 1997)। **प्रकाशन :** जापानी तथा अंग्रेज़ी में 5 पुस्तकें प्रकाशित। जापानी में हिंदी भाषा तथा साहित्य पर लगभग 15 अकादेमिक पेपर। **सम्मान :** 8वें विश्व हिंदी सम्मेलन, न्यूयार्क में विश्व हिंदी सम्मान (2007)

जापान में हिंदी और भारतीय भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन का इतिहास काफी पुराना है। आपको यह जानकर आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता होगी कि जापान में हिंदी-उर्दू शिक्षण की परंपरा को आरंभ हुए 100 वर्ष पूरे हो गए हैं। सन् 1908 में तोक्यो विदेशी भाषा विद्यालय (Tokyo School of Foreign Languages : TSFL) में हिंदुस्तानी और तमिल भाषा की पढ़ाई शुरू की गई। तब दोनों भाषाएँ सर्टिफिकेट और डिप्लोमा के रूप में पढ़ाई जाती थीं। उसके बाद सन् 1911 में हिंदुस्तानी भाषा को स्वतंत्र विभाग का दर्जा दिया गया और इसके अंतर्गत डिग्री कोर्स की पढ़ाई शुरू हो गई। कई कारणों से तमिल विभाग आगे नहीं चल सका। तब से आज तक प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान भी स्थगन के बिना पढ़ाई जारी रही है। इसी बीच सन् 1949 में TSFL का नाम बदलकर तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरैन स्टडीज (TUFL) हो गया। सन् 1961 में हिंदुस्तानी विभाग उर्दू और हिंदी के दो स्वतंत्र विभागों में विकसित हो गया तथा सन् 1966 में एम.ए. और सन् 1992 में पी-एच.डी. स्तर का अध्यापन भी शुरू हो गया। फिर सन् 2012 के अप्रैल में बढ़ते भारत-जापान संबंध को देखते हुए नए सिरे से बँगला विभाग भी स्थापित किया गया। आजकल इन तीनों विभागों में संस्कृत, पालि, मराठी, नेपाली, पंजाबी, सिंधी, मलयालम और तमिल भाषाएँ सर्टिफिकेट कोर्स के रूप में पढ़ाई जाती हैं।

- **जन्म :** 14 फरवरी, 1975 (क्योतो, जापान)।
- **शिक्षा :** तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरैन स्टडीज (एम.ए. 2000)।
- **कार्य :** लेक्चरर (अंशकालिक), तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरैन स्टडीज और तोकाई विश्वविद्यालय।
- **शोध क्षेत्र :** आधुनिक भारत में भाषा और मुद्रण; भारत-जापान संबंधों का इतिहास।
- **प्रकाशन :** ''मेइजी, ताइशो तथा शोवा युग (1868 1989) में दक्षिण एशियाई अध्ययन; लेख सूची (2006) आदि।

हमारी यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी की विशेषताएँः संक्षिप्त परिचय (देखिए, फोटो नं. 1)

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि ऐसी विदेशी भाषाओं के पठन-पाठन के लिए उन्हीं भाषाओं में लिखी पुस्तकों की भारी जरूरत होती है। हमारी यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी में दुनिया भर की भाषाओं की

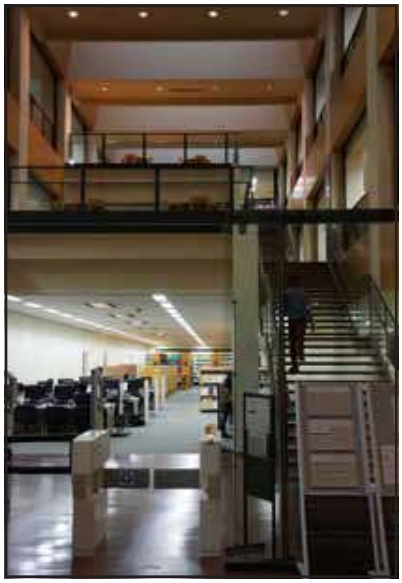
University-Library

लगभग 7 लाख किताबें हैं जिनमें भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की संख्या कुल मिलाकर 45,000 के आसपास ही है। यहाँ हिंदी भाषा के अलावा संस्कृत, प्राकृत, पालि, उर्दू, बंगाली, पंजाबी, मैथिली, सिंधी और कई द्रविड़ भाषाओं की किताबें भी शामिल हैं। सिर्फ मानक हिंदी की ही नहीं, बल्कि ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी और पहाड़ी जैसी बोलियों की पुस्तकें भी मौजूद हैं।

इनके अलावा लाइब्रेरी में 200 से अधिक भारतीय पत्र-पत्रिकाओं का अच्छा-खासा संग्रह है और साथ ही कई विशेष संकलन भी हैं। विशेष संकलनों में उल्लेखनीय हैं; प्रो. गामो की निजी लाइब्रेरी और नवलकिशोर कलेक्शन। प्रो. गामो हिंदुस्तानी विभाग के प्रथम जापानी अध्यापक थे। उनकी लाइब्रेरी में प्रेमचंदजी के उपन्यास गोदान, कर्मभूमि, गबन, गोदान वगैरह के प्रथम संस्करण हैं। 19वीं शताब्दी के विख्यात प्रकाशक मुंशी नवलकिशोरजी (1836-1895) के जमाने में नवलकिशोर प्रेस (लखनऊ) ने 4,000 से अधिक संस्कृत, हिंदी, उर्दू, पारसी और अरबी किताबें प्रकाशित की थीं। उनमें से लगभग 1,000 पुस्तकें हमारे पास ही हैं। ये सब किताबें SARDA (शारदा) कलेक्शन के नाम पर डिजिटैज की गई हैं और अब वेब (web) में आ गई हैं (http://repository.tuhs.ac.jp/doc/sarda/about_e.html)। आप घर में बैठकर आराम से इन पुस्तकों को पढ़ सकते हैं। नवलकिशोर प्रेस की पुस्तकें हमारी लाइब्रेरी के अतिरिक्त दुनिया में विख्यात ब्रिटिश लाइब्रेरी, लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, और शिकागो यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी में सुरक्षित हैं।

पं. रामचंद्र शुक्लजी के हिंदी साहित्य का इतिहास में जितने कवियों और साहित्यकारों के बारे में चर्चा की गई हैं, लगभग उन सबों की रचनाएँ हमारी लाइब्रेरी में मिल जाती हैं। शुक्लजी के इतिहास के बाद समकालीन युग तक हिंदी जगत में जितने नए लेखकों का आविर्भाव हुआ, उनकी रचनाओं को पढ़ने में कोई कठिनाई महसूस नहीं की जाती है। आधुनिक भारत के साहित्यिक विचारधाराओं की—चाहे वह प्रगतिवाद, छायावाद या प्रयोगवाद हो—मुख्य रचनाएँ और दलित साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है।

सिर्फ हिंदी ही नहीं, बल्कि भारतीय साहित्य और भाषाओं के अध्ययन में फोर्ट विलियम कॉलेज (**Fort William College**, कलकत्ता), हेइलीबेरी कॉलेज **(Haileybury College, Hertford)** और श्रीरामपुर मिशन **(Serampore Mission)** के योगदान को नकारा नहीं किया जा सकता। हमारी लाइब्रेरी में इन तीनों संस्थानों से प्रकाशित कई दुर्लभ ग्रंथों का संकलन है।

यहाँ ब्योरे के साथ 45,000 पुस्तकों का पूरा का पूरा परिचय देना संभव ही नहीं है। पर खुशी की बात है कि इन सबों का डाटा अब यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के **Web catalogue (OPAC)** में उपलब्ध हो गया है।

दुर्लभ पुस्तकों की एक झलक

आइए, अब हमारी लाइब्रेरी में सफर कीजिए। हम आपको फोटो के साथ चुनी हुई दुर्लभ और अमूल्य पुस्तकों को दिखाएँगे।

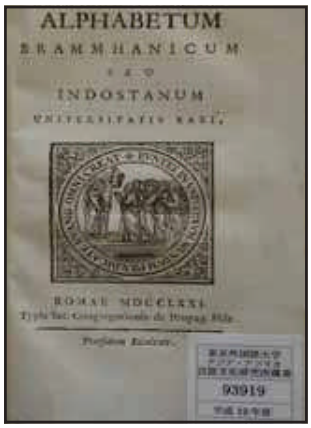

Alphabetum Brammhanicum

लाइब्रेरी में हिंदी की सबसे पुरानी पुस्तक है Alphabetum brammhanicum sev indostanum universitatis kasi। असल में यह लैटिन भाषा में लिखी हुई हिंदी व्याकरण ही है, जो 1771 में रोम (इटली) में छपी थी (देखिए, फोटो न. 2)। इसके बाद आएँगी **Singhasun butteesee** (1805) और **General principles of inflection and conjugation in the Bruj B,hak,ha** (1811) जो फोर्ट विलियम कॉलेज द्वारा प्रकाशित की

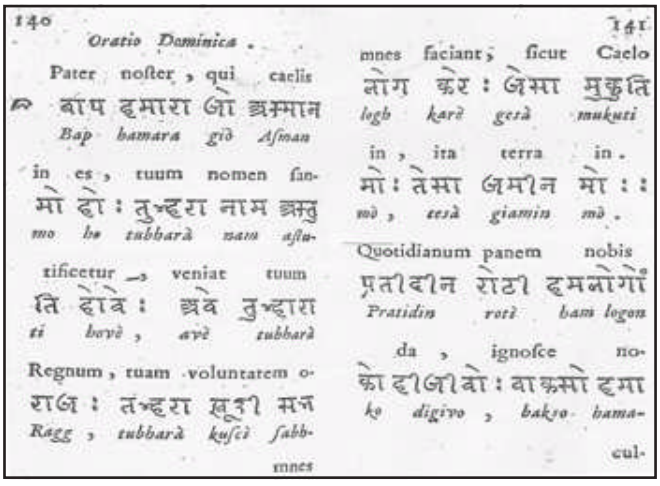
Alphabetum Brammhanicum 2

गई थीं (देखिए, फोटो न. 3)। लाइब्रेरी में इस कॉलेज की 20 से अधिक किताबें हैं। इनके साथ ही 19वीं शाताब्दी के शुरू में श्रीरामपुर मिशन द्वारा प्रकाशित बाइबिल की अनूदित पुस्तकें भी मौजूद हैं (देखिए, फोटो न. 4)।

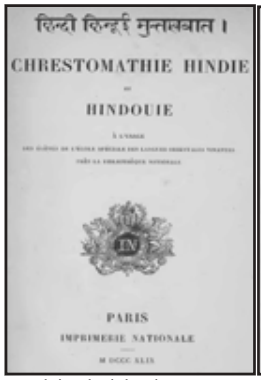

hindI hindUI muntakhabAt

General Principls

हमारी लाइब्रेरी में सबसे बहुमूल्य पुस्तक है **Les Hindous** (4 खंडों में)। यह 1808–12 में प्रकाशित की गई फ्रांसीसी किताब है। कहा जाता है कि अब दुनिया में इसकी सिर्फ 50 प्रतियाँ रह गई हैं। इसमें अनेक हस्तलिखित रंगीन सुंदर चित्र संगृहीत हैं (देखिए, फोटो न. 5)। **M. Garcin de Tassy** द्वारा लिखी गई पुस्तकें **Rudimemts de la langue hindoui** और हिंदी हिंदुई मुंतख बात भी देख सकते हैं

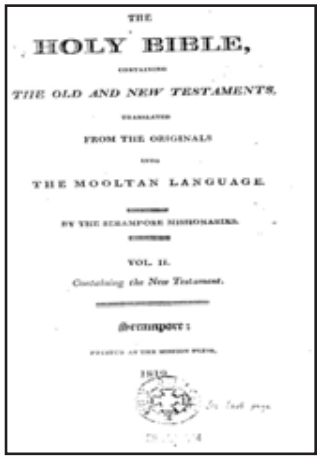

Holy Bible Mooltan

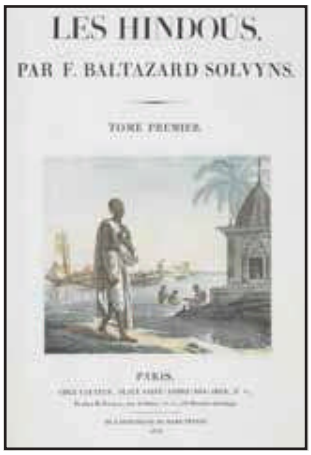

Les Hindous

(देखिए, फोटो न. 6)। प्रेम सागर के कई संस्करणों की 10 पुस्तकें हैं जिनमें से सबसे पुरानी पुस्तक 1851 की है **(Edward B. Eastwick, The Prem Sagar, or, The ocean of love)**। इसके अलावा बाग व बहार के कई संस्करणों की 35 पुस्तकें भी हैं। ईस्ट इंडिया कंपनी का हेइलीबेरी कॉलेज, जो फोर्ट विलियम कॉलेज बंद होने के बाद भारतीय भाषाओं के अध्ययन–अध्यापन के केंद्र के रूप में उभर आया था। उसके ऐतिहासिक कागजात भी माइक्रो फिल्म में शोधकर्ताओं को उपलब्ध कराए जाते हैं।

आधुनिक काल में आते ही आपको भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850–1885) की 35 पुस्तकें, राजा शिवप्रसाद सितारे–हिंद (1824–95) की 10 पुस्तकें, और लल्लूजी लाल (1463–1825) की 18 पुस्तकें भी मिल जाती हैं। **G.A. Grierson** (1851–1941) का **A handbook to the Kaithi character** भी है, जो 1899 में प्रकाशित किया गया था। यह बहुत ही दुर्लभ ग्रंथों में से एक है। फिर आप को **J.T. Thompson** के हिंदी शब्दकोश (1870) और **John Shakespear** का हिंदुस्तानी व्याकरण (1813) भी मिल जाएगा।

SinghasunButeesee

Rudiments La Langue Hindoui

अब पत्रिकाओं की झाँकी लें। हमारी लाइब्रेरी में निम्नलिखित शोध पत्रिकाओं की लगभग पूरी जिल्दें हैं (देखिए, फोटो न. 7)।

hindI-patrikAeM-1

hindI-patrikAeM-2

महावीरप्रसाद द्विवेदीजी (1864–1938) द्वारा संपादित सरस्वती, नागरी प्रचारिणी पत्रिका (नागरी प्रचारिणी सभा,काशी), भारतीय

c

साहित्य (हिंदी विद्यापीठ, आगरा), सम्मेलन पत्रिका (हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग) हिंदुस्तानी (हिंदुस्तानी एकेडमी), परिषद् पत्रिका (बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्), हिंदी अनुशीलन (भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग), भाषा (केंद्रीय हिंदी निदेशालय) आदि उपलब्ध हैं।

हिंदी-शिक्षण और हिंदी साहित्य के अध्ययन के लिए पॉपुलर पत्रिकाओं का अचल महत्त्व है। लेकिन ऐसी पत्रिकाओं के अंक पढ़ने के बाद अक्सर बिखर ही जाते हैं। रिसर्च लाइब्रेरी भी उनका उचित ध्यान नहीं रखतीं। पर हमारे यहाँ ऐसा कभी नहीं हो सकता। हमारी लाइब्रेरी में निम्नलिखित पत्रिकाओं की जिल्दें उपलब्ध हैं—चाँद, माधुरी, मनोरंजन, धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान, अज्ञेयजी द्वारा संपादित दिनमान, रविवार (कलकत्ता), ज्ञानोदय (भारतीय ज्ञानपीठ), कल्याण (गोरखपुर), कादंबिनी, मुक्ता, सरिता, सारिका, कल्पना (हैदराबाद), हंस (नया संस्करण), आलोचना (राजकमल प्रकाशन) आदि।

इसके अलावा निर्बला सेवक (बिजनौर), प्रताप (कानपुर), जयाजी प्रताप (ग्वालियर) जैसी दुर्लभ पत्रिकाओं की कई जिल्दें भी हैं।

हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन में योगदान

हमारी लाइब्रेरी में हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन के लिए बहुत ही मूल्यवान सामग्री भी मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, प्रेमचंदजी द्वारा संपादित साप्ताहिक पत्रिका जागरण को लें। हमारे यहाँ इसकी एक जिल्द है। यह पत्रिका इसीलिए महत्त्वपूर्ण है कि इसके 5 अक्तूबर, 1932 के अंक में श्री सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायनजी की कहानी पहले-पहले छपी थी। उस कहानी का शीर्षक है अमर वल्ली। शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दिया गया है श्रीयुत अज्ञेय। इसके बाएँ तरफ यह भी लिखा हुआ है, समय आया है, कि इन अद्‌भुत और अज्ञेय लेखक की रचनाएँ हिंदी-जगत के सामने आएँ—जैनेंद्र कुमार। यहाँ अज्ञेय शब्द का प्रयोग विशेषण के रूप में किया गया था, लेखक के उपनाम के रूप में नहीं। इस से अनुमान किया जा सकता है कि अज्ञेय का नामकरण वस्तुतः जैनेंद्रकुमारजी के द्वारा नहीं, बल्कि जागरण के संपादक प्रेमचंदजी के द्वारा ही किया गया था (देखिए, फोटो न. 8)। अगर नए सिरे से आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास लिखना है, तो इस तथ्य को ध्यान में रखना ही पड़ेगा।

पुरानी पुस्तकों की खोज, नई पुस्तकों के संकलन

पुस्तक-संकलन में सबसे बड़ी कठिनाइयाँ विश्व-युद्ध और युद्धोत्तर समय में हमारे सामने खड़ी हो गई थीं। लेकिन उस समय में भी व्यक्तिगत प्रयत्नों द्वारा पुस्तकें जापान में लाई जाती थीं। इधर पचास साल से हम लोग यूरोप, अमेरिका और भारत की पुरानी पुस्तकों की दुकानों से चुन-चुनकर तरह-तरह की पुस्तकें इकट्ठा करते हैं। हर साल हमारी लाइब्रेरी में भारतीय भाषाओं की 3 हज़ार से अधिक पुस्तकें संगृहीत की जाती हैं।

विशेष संकलनों में उल्लेखनीय हैं; प्रो. गामो की निजी लाइब्रेरी और नवलकिशोर कलेक्शन। प्रो. गामो हिंदुस्तानी विभाग के प्रथम जापानी अध्यापक थे। उनकी लाइब्रेरी में प्रेमचंदजी के उपन्यास गोदान, कर्मभूमि, गबन, गोदान वगैरह के प्रथम संस्करण हैं। 19वीं शताब्दी के विख्यात प्रकाशक मुंशी नवलकिशोरजी (1836-1895) के जमाने में नवलकिशोर प्रेस (लखनऊ) ने 4,000 से अधिक संस्कृत, हिंदी, उर्दू, पारसी और अरबी किताबें प्रकाशित की थीं। उनमें से लगभग 1,000 पुस्तकें हमारे पास ही हैं। ये सब किताबें SARDA (शारदा) कलेक्शन के नाम पर डिजिटैज की गई हैं

पुस्तकालय संग्रह के आधार पर, तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज का हिंदी विभाग हिंदी भाषा से संबंधित जानकारी साझा करने के लिए एक विश्वव्यापी प्लेटफॉर्म विकसित करने की कोशिश

j Agara N1

j Agara N2

कर रहा है।

यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी का होम पेज और ऑपाक (OPAC)

हमारा पुस्तकालय हिंदी से संबंधित जिस सामग्री को सूचीबद्ध और आर्काइव्ज कर रहा है, उसमें पुस्तकों के अलावा ऐतिहासिक दस्तावेज और मौखिक रिकॉर्डिंग भी शामिल हैं। यह सूचना हमारे बहुभाषी पुस्तकालय-सिस्टम के माध्यम इंटरनेट के जरिए प्रचारित की जा रही है।

आप हमारी लाइब्रेरी के होम पेज और Web Catalogue (OPAC) पर एक बार जरूर नजर डालिए (http://www.tufs.ac.jp/library/index-e.html)। उपर्युक्त दुर्लभ ग्रंथों का डिजिटल डाटा हमारे डाटाबेस *Prometheus* में उपलब्ध है (http://http://repository.tufs.ac.jp/handle/10108/41390)। यहाँ से इसे आवश्यकतानुसार डाउनलोड भी कर सकते हैं।

लाइब्रेरी में हिंदी की सबसे पुरानी पुस्तक है Alphabetum brammhanicum sev indostanum universitatis kasi। असल में यह लैटिन भाषा में लिखी हुई हिंदी व्याकरण ही है, जो 1771 में रोम (इटली) में छपी थी (देखिए, फोटो न. 2)। इसके बाद आएँगी Singhasun butteesee (1805) और General principles of inflection and conjugation in the Bruj B,hak,ha (1811) जो फोर्ट विलियम कॉलेज द्वारा प्रकाशित की गई थीं (देखिए, फोटो न. 3)। लाइब्रेरी में इस कॉलेज की 20 से अधिक किताबें हैं। इनके साथ ही 19वीं शाताब्दी के शुरू में श्रीरामपुर मिशन द्वारा प्रकाशित बाइबिल की अनूदित पुस्तकें भी मौजूद हैं

अंत में

हमें विश्वास है कि हमारा कार्यकलाप हिंदी भाषा के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व को व्यापक रूप से योगदान देगा। इस अवसर पर हम लोग कहना चाहते हैं कि पूरी दुनिया के सभी हिंदी दोस्तों के साथ इन आदर्शों और उद्देश्यों को आगे बढ़ाने और उसमें सहयोग करने ही से हम सम्मानित महसूस करते हैं।

जापान का यह ज्ञान भंडार सिर्फ हिंदी प्रेमियों के लिए ही नहीं, बल्कि दुनिया भर के लोगों के लिए हमेशा खुला ही रहता है और भविष्य में भी खुला ही रहेगा।

हम आशा करते हैं कि हमारी लाइब्रेरी हिंदी भाषा की विकास यात्रा में सार्थक योगदान कर सके। इसके लिए पाठक लोगों से हमारा विनम्र निवेदन है कि भारत संबंधी अध्ययन के भविष्य के लिए पुस्तक संकलन में सहयोग दें। खासकर प्रवासी भारतीय लोगों की रचनाओं की पुस्तकें हमारे यहाँ तक पहुँचाने की कृपा करें।

—प्रो. ताकेशि फुजिइ और श्री क्योसुके आदाची (लेक्चरर),
तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, जापान
तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज और भारतीय भाषाओं का अध्ययन-अध्यापन

❑

अपने किए हुए शुभ और अशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है।

— नारदपुराण

✕ ✕ ✕

भला करनेवाले का भला होता है और बुरा करनेवाले का बुरा।

— सोमदेव